डॉ॰ निरंजन प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

कामायनी (जयशंकर प्रसाद)

प्रश्न। कामायनी में वर्णित लज्जा और श्रद्धा संवाद का काव्य सौंदर्य उद्घाटित कीजिए।

उत्तर: 'लज्जा सर्ग' काव्य की दृष्टि से सबसे महत्व का है। इस सर्ग में कवि ने लज्जा के उदय के भाव का बड़ा ही मनोरम चित्र उपस्थित किया है। कवि ने लज्जा का परिचय देते हुए प्रारंभ में ही यह स्पष्ट कर दिया है कि लज्जा छिपते हुए आती है। श्रद्धा यही नहीं समझ पाती कि यह कौन-सा मनोभाव है, जिसे वह जितना छिपाने की कोशिश करती है अनावृत होता चला जाता है। लज्जा खुद से प्रश्न करने लगती है — जिस प्रकार नन्हीं कली स्वयं को कोमल पत्तियों में छिपा लेती है, उसी प्रकार तुम कौन हो जो अपने सुंदर आँचल में स्वयं को छिपाने का प्रयत्न कर रही हो। इन पंक्तियों में लज्जा के सूक्ष्म अमूर्त भाव का मूर्तिकरण हुआ है जो अत्यन्त कोमल और सजीव है। यहाँ उपमा एवं मानवीकरण अलंकार का प्रयोग हुआ है। कवि ने यहाँ सार्थक शब्द-संयोजन को रूप दिया है। लज्जा विस्मृत सपनों सी मादकता तथा लहरों द्वारा विलीन होने वाले बुलबुलों-सा आकर्षक है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि उसमें मादकता और मधुरिमा है। कवि ने लज्जा की तुलना लता और ऐसी नायिका से की है जो आलिंगन के लिए बाँहें फैलाए हुए आती है। स्पष्ट है लज्जा मिलन की भावना प्रकट करती है।

श्रद्धा लज्जा को संबोधित करते हुए कहती है — तुमने जादू के लाल फूलों से लाल सिंदूर की भाँति लाल पराग के कण एकत्र कर लिए हैं और तुम सिर नीचा किए, बड़ी तन्मयता से इन फूलों की माला बना रही हो। इनमें मकरन्द की धारा सदृश आनंद की धारा प्रवाहित हो रही है। जिस प्रकार वृक्ष की शाखा फलों के भार से नीचे झुक जाती है उसी प्रकार तुम्हारा आगमन होते ही मन दब-सा जाता है।

"स्मित बन जाती है तरल हँसी
नयनों में भरकर बाँकपन
प्रत्यक्ष देखती हूँ सब जो
वह बनता जाता है सपना।"

इन पंक्तियों में यह संकेत किया गया है कि लज्जा के कारण खुलकर हँसना भी नहीं हो पाता। वास्तविकता भी अवास्तविकता की भाँति जान पड़ती है। विद्यापति ने भी सलज्ज युवती में होने वाले अद्भुत परिवर्तन का चित्रण किया है।

श्रद्धा लज्जा को संबोधित करते हुए कहती है — तुमने मुझमें यह कैसा परिवर्तन ला दिया है कि उसी मनु को अब स्पर्श करने में भी झिझक होती है पलकें नीचे झुक जाती हैं और संकोच के कारण मैं उन्हें देख भी नहीं पाती। इन पंक्तियों में एक सलज्ज युवती का अत्यन्त मनमोहक और मनोवैज्ञानिक चित्र देखने को मिलता है। ऐसा लगता है प्रसाद जी ने सूक्ष्म पर्यवेक्षण में जैसे सिद्धहस्तता प्राप्त कर ली हो। इसी विशेषता को देखते हुए डा० द्वारिका प्रसाद सक्सेना ने कहा है — "सौन्दर्य दर्शन, श्रृंगारिकता, प्रकृति पर चेतना का आरोप, चित्रभाषा, अभिव्यंजना की अनूठी शैली और नए-नए अलंकारों का प्रयोग 'कामायनी' की कतिपय विशेषताएँ हैं।"

श्रद्धा लज्जा से कहती है — मैं भले कुछ न कहूँ लेकिन आँखें ही मेरे हृदय के भावों को व्यक्त कर देती हैं। इससे स्पष्ट है कि मेरे हृदय में प्रेम की भावना है। सामान्यतः लज्जा के कारण युवती में प्रेमोद्गार प्रकट करने में संकोच होता है और भृकुटि संचालन द्वारा अपने प्रणय का परिचय नहीं दे पाती। श्रद्धा की बातों से संध्या की लालिमा में लिपटी लज्जा मानो मुस्कुराते हुए एक स्वर में कुछ कहती है मानो ऐसा प्रतीत होता मानो वह श्रद्धा के प्रश्नों का उत्तर दे रही हो। आगे लज्जा श्रद्धा से कहती है, मैं नवयुवतियों में इस सौंदर्य पर नियंत्रण रखती हूँ, जो शरीर में मादकता के साथ तीव्र गति से प्रवाहित होते हैं और जिसका स्वरूप पर्वतीय झरनों के समान होता है। यहाँ लज्जा स्पष्ट करती है कि वह नवयुवतियों को उच्छृंखल होने से बचाती है। लज्जा श्रद्धा से यह कहती है कि मैं नवयुवतियों की

P.T.O

संरक्षिका हूं जिनमें मंगल कुंकुम के लालिमा के समान सौंदर्य की कांति हो और जिनमें उषा की लालिमा के समान उसके अंग झलक रहे हो। आगे वह कहती है, जिस प्रकार नीलम के पर्वत घाटियों में उमड़ने वाले जल से, पूर्ण बादलों के छा जाने से अपूर्व सुंदरता छा जाती है उसी प्रकार यौवन के प्रविष्ट होते ही काली-काली पुतलियों वाली नवयुवतियों के नैनों में रस भर जाता है बादलों के मध्य से बिजली कौंध-कौंध कर अंतर में शीतलता व्यक्त करती है।

लज्जा के रूप-सौंदर्य वर्णन में तो कवि ने कमाल कर दिया है। लज्जा श्रद्धा से कहती है- कोमल पत्तों से जो अस्फुट ध्वनि निकलती है वह मानो यौवन की विजय घोषणा है। डॉ शंभुनाथ के शब्दों में —"अनुभव और संचारी भाव के रूप में लज्जा का जैसा मनोवैज्ञानिक और पूर्ण चित्रण 'कामायनी' में मिलता है, वैसा और कहीं नहीं हुआ है।"

लज्जा चेतना के आंगन में भगवान का शुभ वरदान है। इसी का दूसरा नाम सौंदर्य है। यदि लज्जा न हो तो युवा और युवतियां उन्माद में आकर अनेक भूल कर सकते हैं इसलिए लज्जा श्रद्धा को भावी कष्टों से बचाने की प्रेरणा देती है। इस प्रकार, कहा जा सकता है कि लज्जा सर्ग में लज्जा और श्रद्धा का संवाद सार गर्भित है, इसमें लज्जा के सौंदर्य का अद्भुत सम्मिश्रण हुआ है। यहां प्रसाद जी ने सौंदर्य के उद्घाटन में अपनी अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया है। यहां मौलिक व्यंजना के साथ नवीन भावा, नवीन बिम्बों, नवीन भावों एवं नवीन छंदो का प्रयोग हुआ है। प्रसाद जी की भाषा लज्जा के सौंदर्य को उद्घाटित करने में समर्थ है।

—

P. G. Semester III

CC-10

'Lajja Sradha Samvad'